Q. राज्य की उत्पत्ति के सामाजिक समझौता सिद्धान्त की आलोचनात्मक विवेचना करें।

Ans: राज्य की उत्पत्ति के सामाजिक समझौते का सिद्धान्त काफी महत्वपूर्ण तथा प्राचीन सिद्धान्त है। इस सिद्धान्त के अनुसार राज्य दैवीय संस्था न होकर एक मानवीय संस्था है, जिसका निर्माण व्यक्तियों द्वारा पारस्परिक समझौते के आधार पर किया गया है। महाभारत के शान्तीपर्व में कहा गया है कि पहले राज्य नही था, राज्य की जगह अराजकता थी जिससे तंग आकर मनुष्यो ने परस्पर समझौता किया और मनु को अपना शासक चुना। आचार्य कौटिल्य ने भी अर्थशास्त्र मे इसी मत का समर्थन किया है तथा बताया है कि प्रजा ने राजा को चुना और राजा ने प्रजा की सुरक्षा का वचन दिया। यूनान के सोफिस्टो ने भी राज्य को कृत्रिम संस्था बताया। इसके साथ ही इपीक्युरियन विचारको ने भी इसका समर्थन किया है तथा इस बात पर बल दिया है कि जनता राज्यसत्ता का अन्तिम स्त्रोत है, 16 वीं — 17 वीं सदी मे यह विचार काफी लोकप्रिय हुआ। रिचार्ड हूकर ने सर्वप्रथम, वैज्ञानिक रूप से समझौते की व्याख्या की, लेकिन इस सिद्धान्त का वैज्ञानिक और विधिवत रूप से प्रतिपादन हॉब्स, लॉक और रूसो द्वारा किया गया, जिन्हे संविदावादी विचारक कहा जाता है।

सामाजिक समझौते के सिद्धान्त के प्रतिपादको के अनुसार मानव इतिहास की दो अवस्था है (1) प्राकृतिक अवस्था — जिसके अन्तर्गत जीवन को व्यवस्थित रखने के लिए राज्य या राज्य जैसी कोई संस्था नही थी। (2) नागरिक जीवन के प्रारंभ के बाद की अवस्था - जिसमे लोगो ने प्राकृतिक अवस्था का त्याग किया तथा परस्पर समझौते द्वारा राजनीतिक समाज की स्थापना की। लेकिन इस सिद्धान्त के प्रतिपादको मे इस प्राकृतिक अवस्था के सम्बन्ध में काफी मतभेद है। कुछ इसे पूर्व सामाजिक तथा कुछ इसे पूर्व राजनीतिक अवस्था मानते है। लेकिन तीनो विचारक राज्य की उत्पत्ति से पूर्व की अवस्था को प्राकृतिक अवस्था बताते है तथा समझौते द्वारा

Scanned with CamScanner

राज्य की उत्पत्ति और प्राकृतिक अवस्था को समाप्त करने की बात कहते हैं। सामाजिक समझौते के सिद्धान्त को स्पष्ट करने के लिए हाब्स, लॉक और रूसो तीनों विचारकों के विचारों का विश्लेषण करना आवश्यक है।

थॉमस हाब्स इंगलैण्ड के निवासी थे और राजवंश से सम्बन्धित होने के कारण राजतंत्र के समर्थक थे। उनके समय में इंगलैण्ड में राजतंत्र और प्रजातंत्र समर्थकों के बीच तनावपूर्ण विवाद चल रहा था। हाब्स का विचार था कि राजतंत्र के बिना देश में शान्ती और व्यवस्था स्थापित नहीं हो सकती है। अपने इसी विचार का प्रतिपादन करने के लिए उसने 1651 में प्रकाशित अपनी पुस्तक 'Leviathan' में समझौते के सिद्धान्त का सहारा लिया।

हाब्स के अनुसार मानव स्वभाव से ही स्वार्थी दुष्ट और झगड़ालू प्रवृत्ति का होता है। हाब्स के अनुसार प्राकृतिक अवस्था 'जिसकी लाठी उसकी भैंस' वाली अवस्था थी। स्वयं हाब्स के शब्दों में "वहाँ कोई व्यवसाय न था, कोई संस्कृति न थी, कोई विद्या न थी, कोई भवन निर्माण कला न थी और न कोई समाज था। मानव जीवन असहाय, दीन, मलिन, पाशविक और अल्पकालिक था।" अर्थात प्रत्येक मनुष्य के लिए दूसरा मनुष्य शत्रु था और सभी मूर्ख भेड़ियों के समान एक दूसरे को निगल जाने को तत्पर रहते थे।

हाब्स के अनुसार जीवन और सम्पत्ति की असुरक्षा तथा मृत्यु और संहार के भय ने व्यक्तियों को इस बात के लिए प्रेरित किया कि वे इस असहाय और असुरक्षित अवस्था का अन्त कर एक राजनीतिक समाज का निर्माण करें।

Scanned with CamScanner